वर्ष-202

# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें ↓

| परीक्षा का विषय | विषय कोड | | | परीक्षा का माध्यम |
|---|---|---|---|---|
| हिंदी | 0 | 5 | 1 | हिंदी |

[redacted]

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक – 321 –

953007

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

| 2 | 2 | 2 | 6 | 2 | 5 | 9 | 7 | 9 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

शब्दों में

| दो | दो | दो | छः | दो | पाँच | नौ | सात | नौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

नीचे दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें।

| उदाहरणार्थ | 1 | 1 | 2 | 4 | 3 | 9 | 5 | 6 | 8 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | एक | एक | दो | चार | तीन | नौ | पाँच | छः | आठ |

क – पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंको में X शब्दों में X

ख – परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 01

ग – परीक्षा की दिनांक 19 02 22

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकेण्डरी परीक्षा केन्द्र क्रमांक–261011

| पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर | केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर |
|---|---|
| | |

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तनुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया अन्दर के पृष्ठों के अनुरुप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी अंकों का योग सही है।

**निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।**

| उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा | परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा |
|---|---|
| संदीप कुमार शर्मा परीक्षक क्र. 9870, उ.मा.वि. | एच. आर. शर्मा |

नोट :– "हायर सेकेन्डरी परीक्षा में केवल वाणिज्य संकाय के विषयों तथा हाईस्कूल परीक्षा में प्रायोगिक विषय को छोड़कर शेष विषयों हेतु नियमित एवं स्वाध्यायी छात्रों के लिये प्रश्न पत्र 100 अंकों का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक का 80% अधिभार एवं स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में प्रदर्शित किये जायेंगे।"

केवल परीक्षक द्वारा भरा जायें

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें

| प्रश्न क्रमांक | पृष्ठ क्रमांक | प्राप्तांक (अंको में) |
|---|---|---|
| 1 | | |
| 2 | | |
| 3 | | |
| 4 | | |
| 5 | | |
| 6 | | |
| 7 | | |
| 8 | | |
| 9 | | |
| 10 | | |
| 11 | | |
| 12 | | |
| 13 | | |
| 14 | | |
| 15 | | |
| 16 | | |
| 17 | | |
| 18 | | |
| 19 | | |
| 20 | | |
| 21 | | |
| 22 | | |
| 23 | | |
| 24 | | |
| 25 | | |
| 26 | | |
| 27 | | |
| 28 | | |
| | | कुल प्राप्तांक अंकों में |

विशेष नोट :– सिलाई खुली हुई अथवा क्षतिग्रस्त उत्तर पुस्तिका को न तो पर्यवेक्षक वितरण करें और न ही छात्र उपयोग में ले। ऐसी उत्तर पुस्तिका में लिखें उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जायेगा।

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें → केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जायें → परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें →

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक – 1 का उत्तर

(i) (ब) जग – जीवन का।

(ii) (स) धूत कहौ अवधूत कहौ

iii) (ब) जब मन खाली न हो

iv) (द) चाँद सिंह

v) (अ) आनन्द यादव

vi) (द) उपरोक्त सभी

M P B S E

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

## प्रश्न क्रमांक – 2 का उत्तर

i) प्रत्याशा

ii) लक्ष्मीन

iii) मराठी

iv) कम

v) उत्साह

vi) मात्रिक

vii) आकाश

MPBSE

## प्रश्न क्रमांक – 3 का उत्तर

| | |
|---|---|
| i) बात की चूड़ी मर जाना | (अ) कथानक |
| ii) अवधूत | (ब) 16 – 16 मात्राएँ |
| iii) सिल्वर वैडिंग | (स) संस्कृत के मूल शब्द |
| iv) कहानी का केंद्रीय बिंदु | (द) बात का प्रभावहीन हो जाना |
| v) चौपाई छंद | (इ) यशोधर बाबू |
| vi) तत्सम | (फ) शिरीष के फूल |

मध्यप्रदेश
MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक – 4 का उत्तर

i) उषा का जादू सूर्योदय होते ही टूटता है।

ii) पहलवान लुट्टन सिंह के दो पुत्र थे।

iii) सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा नगर ~~मोहनजो~~ मोहनजोदड़ो था।

iv) आमतौर पर रेडियो नाटक की अवधि 15–30 मिनट होनी चाहिए।

v) शब्दगुण तीन प्रकार के होते हैं।

vi) दूसरा घर कर लेने का अर्थ "दूसरी शादी (ब्याह) कर लेना" होता है।

vii) वह शब्द जो कि विशेषण एवं क्रिया की विशेषता बतलाते हैं क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

M
P
B
S
E

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

## प्रश्न क्रमांक – 5 का उत्तर

i) सत्य

ii) असत्य

iii) सत्य

iv) असत्य

v) असत्य

vi) असत्य

MPBSE

प्रश्न क्र.

M P B S E

प्रश्न क्रमांक – 6 का उत्तर

बच्चे अपने माता - पिता के लौट आने तथा उनके स्नेह एवं भोजन तथा जल की आशा में नीड़ो से झाँक रहे होगें अर्थात् चिड़िया जब वापस नीड़ में लौटती है तो वह दाना - पानी अपने बच्चे के लिए लाती है तथा उन्हें देत स्नेह देती है, इसी आशा में बच्चे नीड़ो से झाँक रहे होंगे।

प्रश्न क्रमांक – 7 का उत्तर (अथवा)

~~उषा कविता में कवि ने भोर के नभ की तुलना गहरे नीले शंख से क~~

छोटा मेरा खेत कविता के संदर्भ में अंधड़ का अर्थ 'भावना रूपी आँधी' तथा बीज का अर्थ 'शब्द और विचार तथा अभिव्यक्ति' है।
यहाँ कवि का आशय है कि अंधड़ अर्थात् भावना रूपी आँधी से आय बीज अर्थात् विचार को शब्द के माध्यम से खेत में बो दिया।

## प्रश्न क्रमांक – 8 का उत्तर

भक्तिन के आ जाने से महादेवी निम्न कारणों से अधिक देहाती हो गई –

(i) भक्तिन ने महादेवी को गाँव का भोजन पकाकर खाना सिखला दिया, अब वह गाँव का भोजन बड़े चाव से खाती थी।

(ii) महादेवी जी गाँव की परंपराएँ, आचरण – विचारों से परिचित हुई तथा उनकी जीवन शैली में कई देहाती शब्द भी शामिल हो गए।

भक्तिन नें महादेवीजी को भले ही अधिक देहाती बना दिया लेकिन भक्तिन ने स्वंय शहर का एक भी आचरण न सीखा।

## प्रश्न क्रमांक – 9 का उत्तर

ढोलक की आवाज पूरे गाँव में संजीवनी की तरह कार्य करती थी तथा लोगों में वीरता का संचार हो जाता था। भले ही ढोलक की आवाज किसी रोग की न ही दवा थी और न ही दर्द से राहत देती थी लेकिन यह आवाज लोगों की नसों में साहस भर देती थी।

M P B S E

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक -10 का उत्तर (अथवा)

यशोधर बाबू की पत्नी विचारों से आधुनिक नहीं थी, लेकिन बच्चों की तरफदारी की मातृसुलभ प्रकृति ने उसे मॉड बना दिया। साथ ही वह संयुक्त परिवार से आई थी इसलिए उसकी अधिकांश इच्छाएँ अतृप्त रही

प्रश्न क्रमांक – 10 का उत्तर

कविता के प्रति लगाव से पहले लेखक को अकेलापन खटकता था। उसे काम करते हुए कोई न कोई बात करने हेतु चाहिए होता था लेकिन कविता के प्रति लगाव के बाद उसे अकेलापन ही अच्छा लगने लगा और किसी की उपस्थिति उसे अब अच्छी नहीं लगती थी क्योंकि अब वह अकेले में कविता गा सकता था, उसका अभिनय कर सकता था और मन रम जाने पर नृत्य भी करने लगता था।

M P B S E

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

## प्रश्न क्रमांक – 11 का उत्तर (अथवा)

समाचार लेखन में मुख्यत: निम्न छः सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है –

(i) क्या (ii) कब (iii) कौन
(iv) कहाँ (v) कैसे (vi) किसने

इन्हें छः ककारों के नाम से भी जाना जाता है।

MPBSE

## प्रश्न क्रमांक – 12 का उत्तर

करुण रस – सहृदय के हृदय में स्थित 'शोक' नामक स्थायी भाव का जब अनुभाव, विभाव तथा संचारी भाव के साथ संयोग होता है तो करुण रस की निष्पत्ति होती है।

उदाहरण :–

हाय राम कैसे झेले, अपनी लज्जा, अपनी शोक।
गया हमारे ही हाथों से, हमारा राष्ट्रपिता परलोक॥

प्रश्न क्र.

## प्रश्न क्रमांक – 13 का उत्तर (अथवा)

अभिधा – वह शब्द शक्ति जिसमें मुख्यार्थ में कोई बाधा न हो अर्थात् शब्दों से वही सीधा-साधा अर्थ निकाला जाए तो कि वक्ता द्वारा कहा गया हो। 'कथ्य व अर्थ में कोई बाधा न हो' उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं।

## प्रश्न क्रमांक – 14 का उत्तर

| | मुहावरे | लोकोक्ति |
|---|---|---|
| 1. | मुहावरे ~~शब्दांश~~ वाक्यांश होते हैं अतः इनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं किया जा सकता। | लोकोक्ति स्वंय में वाक्य होता है इसलिए इसका स्वतंत्र प्रयोग किया जाता है। |
| 2. | मुहावरा 'अरबी' का शब्द है इसका अर्थ है 'बातचीत करना'। | लोकोक्ति का सामान्य अर्थ होता है लोक में प्रसिद्ध उक्ति या कथन |

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

कुल अंक

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक -15 का उत्तर (अथवा)

(i) क्या शिरीष के वृक्ष बड़े और छायादार होते हैं ?

(ii) अरे ! पन्द्रह वर्ष बीत गए।

MPBSE

प्रश्न क्रमांक -16 का उत्तर

तुलसीदास

(i) दो रचनाएँ - रामचरितमानस , विनयपत्रिका

(ii) भाव पक्ष - तुलसीदास जी लोकमंगल की कामना के कवि के रूप में प्रसिध्द हैं। आप नें राम-राज का आदर्श भारतीय समाज को दिया। आपकी भक्ति दास भाव की है। आपने मर्यादा एवं रक्त संबंधो का आदर्श प्रस्तुत किया। तुलसीदास जी ने जिन - जिन भावनाओं के कोनों का छुआ , उन्हें अपने काव्य में चरम पर पहुँचा दिया।

कला पक्ष — तुलसीदास जी के पास संस्कृत भाषा में सृजन क्षमता होने पर भी उन्होनें लोकभाषा (अवधि एवं ब्रज) में काव्य रचना की हैं। इसलिए आपका काव्य जनमानस के निकट है। दोहा , सोरठा आपके प्रिय छंद रहे हैं। आपमें लोक और शिल्प का द्वंद्व है , आप लोक की

मध्यप्रदेश
कुल अंक
MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

ओर से समाज तथा शिल्प की ओर से मर्यादा में झुके हैं।

" उपमा अलंकार के क्षेत्र में जो पहचान प्रयोग वैशिष्ट्य के रूप में कालिदास जी की है, सांगरूपक के क्षेत्र में वही पहचान तुलसीदास जी की है "

(iii) साहित्य में स्थान — तुलसीदास जी का काव्य साहित्य को अनूठी देन है। तुलसीदास जी 'मानस के हंस' के रूप में प्रसिध्द हैं।

साहित्य में आपका स्थान अद्वितीय, अप्रतिम है।

सूर सूर्य, तुलसी शशि, उडुँगन केशवदास।
अन्य कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करे प्रकाश॥

M
P
B
S
E

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक -17 का उत्तर ~~(अथवा)~~

महादेवी वर्मा

(i) दो रचनाएँ – यामा (काव्य संग्रह), स्मृति की रेखाएँ

(ii) भाषा-शैली – महादेवी वर्मा जी की भाषा - शैली अत्यंत प्रांजल, प्रौढ़, सुगठित है। आपका शब्द चयन प्रभावी एवं चित्र उपस्थित करने वाला है। आपके अपने गद्य का विषय उन क्षेत्रों को चुना जहाँ अन्य गद्यकार ~~उन~~ उन क्षेत्रों को नजरअंदाज कर देते। आपने विचारात्मक, विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया। आपने शब्दों का चयन, वातावरण के अनुरूप किया आपको साहित्यिक भाषा के साथ - साथ गँवई जीवन के शब्दों का भी पर्याप्त ज्ञान है। आपके रेखाचित्र और संस्मरण लेखन की तारीफ जितनी की जाए उतनी कम है।

(iii) साहित्य में स्थान – महादेवी जी को 'आधुनिक जगत की मीरा' कहा जाता है। आपको ज्ञानपीठ पुरस्कार, पद्मभूषण, उत्तरप्रदेश संस्थान का भारत भारती पुरस्कार से अलंकृत किया गया है। आप छायावाद के चार स्तंभों (प्रसाद, पंत, निराला तथा महादेवी वर्मा) में से एक हैं।

कहा गया है कि,

"यदि प्रसाद ने विषय चुना, निराला ने उसमें शब्द भरे, पंत ने उसे भावपूर्ण बनाया तो महादेवी जी ने उसमें प्राण डाले"

MPBSE

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 19 का उत्तर

| | तत्सम | तद्भव |
|---|---|---|
| 1 | तत्सम शब्द हिंदी भाषा में संस्कृत से ज्यों के त्यों ग्रहण कर लिए गए हैं। | तद्भव शब्द तत्सम का अपभ्रंश हैं। इन्हें अपभ्रंश रूप में ग्रहण किया गया है। |
| 2. | तत्सम शब्द मूलतः संस्कृत भाषा के ही हैं। | तद्भव शब्द संस्कृत, ब्रज, पाली, अवधि से अपभ्रंश होते-होते प्राप्त हुए हैं। |

दो तत्सम शब्द - तद्भव

(i) अक्षि - आँख

(ii) आम्र - आम

MPBSE

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक -19 का उत्तर (अथवा)

(i) शौर्यभाव

(ii) राष्ट्रीय भावना में शौर्यभाव का अपना विशिष्ट स्थान है।

(iii) सुदीर्घ का अर्थ 'लम्बा या विस्तृत' होता है।

MPBSE

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 20 का उत्तर

संदर्भ – प्रस्तुत रुबाइया पाठ्य पुस्तक 'आरोह भाग-2' के पाठ 'रुबाँइया' से ली गई हैं। इसके कवि फिराख गोरखपुरी जी हैं।

प्रसंग – बच्चा चाँद को देखकर जिद करने लगता है तो माँ दर्पण में उसे चाँद दिखाकर कहती है कि धरती पर चाँद उतर आया है।

व्याख्या – यहाँ गोरखपुरी जी कहते हैं कि बच्चा आँगन में ठुनक रहा है तथा जिद कर रहा है कि मुझे वह आसमान का चाँद खेलने के लिए चाहिए। माँ उसे दूसरे खिलौने देती है लेकिन वह उस चाँद पर ही ललचाया है। इसलिए माँ उसे मनाने के लिए दर्पण देते हुए कहती है कि देखो शीशे में ही चाँद उतर आया है अर्थात् वह चाँद के प्रतिबिम्ब से बच्चे को सहलाने का प्रयत्न करती है।

काव्य सौन्दर्य – (i) वात्सल्य रस का चित्रण।
(ii) चाँद का दर्पण में उतरना, बच्चे का ललचाना आदि मनभावन शब्दों का प्रयोग हुआ है।

M P B S E

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSEC

प्रश्न क्र.

## प्रश्न क्रमांक – 21 का उत्तर (अथवा)

**संदर्भ** – प्रस्तुत गद्यांश पाठ्य पुस्तक 'आरोह भाग – 2' के पाठ ' पहलवान की ढोलक' से लिया गया है। इसके लेखक फणीश्वर नाथ रेणु जी हैं।

**प्रसंग** – पहलवान महामारी के प्रकोप से ग्रसित गाँव में रात भर ढोलक बजाकर संजीवनी शक्ति भरदेता है।

**व्याख्या** – सारा गाँव महामारी के प्रकोप से कराह रहा है गाँव में हैजा तथा मलेरिया फैल गया है। इस कारण रात्रि में सारे गाँव में सन्नाटा रहता है और केवल लोगों की कराहना सुनाई देता है। लेकिन इस रात्रि की विभीषिका को सिर्फ लुट्टन पहलवान की ढोलक चुनौती देती है। पहलवान शाम से लेकर सुबह तक ढोलक बजाता है। इस ढोलक बजाने के पीछे उसका कुछ भी मंतव्य हो, लेकिन उसकी यह ढोलक की ताल गाँव के अर्द्धमृत, औषधि से उपचारित पथ्य विहीन लोगों में संजीवनी शक्ति भर देती थी। यह ढोलक की आवाज सुनते ही लोगों में वीरता आ जाती थी और उनके सामने दंगल का दृश्य दौड़ पड़ता था और वे मरते हुए भी दर्द महसूस नहीं करते थे।

**विशेष** – (i) भाषा सरल, सीधी एवं सुगठित है।
(ii) पहलवान की ढोलक को संजीवनी के समान बताया गया है।

MPBSE

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

## प्रश्न क्रमांक – 22 का उत्तर (अथवा)

सेक्टर, 1 हनुमानगंज
दिल्ली

29/02/2022

प्रिय मित्र कमलेश,

नमस्कार!

आशा है कि तुम कुशल होगे, मैं भी ठीक हूँ। मुझे तुम्हें यह सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मेरे भाई की शादी दिनांक 28/02/2022 को तय हुई है तथा विवाहोत्सव का आयोजन घर पर ही होगा। इसलिए मैं तुम्हें इस उत्सव में आमंत्रित करते हुए अत्यंत खुश महसूस कर रहा हूँ।

तुम्हें शादी के कुछ दिन पहले ही आना होगा ताकि हम साथ में विवाहोत्सव का आनंद ले सकें। आशा है कि तुम अपने परिवार सहित उपस्थित होकर हमें अनुग्रहीत करोगे।

माताजी तथा पिताजी को नमस्कार!

धन्यवाद,

तुम्हारा मित्र,
अ, ब, स

MPBSE
MPBSE

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARD

प्रश्न क्र.

## प्रश्न क्रमांक – 23 का उत्तर

### (iii) छात्रजीवन में अनुशासन

प्रस्तावना :–

~~प्रस्तावना~~ – अनुशासन सफलता की प्रथम सीढ़ी है। इस सीढ़ी पर चढ़कर ही कोई छात्र अपने गंतव्य तक पहुँच सकता है। अनुशासन जीवन के प्रत्येक परिच्छेद में आवश्यक है। परंतु छात्रजीवन में इसका विशेष महत्व है क्योंकि छात्रजीवन ही आपके भविष्य का निर्माण करता है। छात्र अनुशासन की बैशाखी पकड़कर कहीं भी पहुँच सकता है। अनुशासन का अर्थ होता है हर काम को नियोजित ढंग से करना तथा समय के बंधन का पर्याप्त ध्यान रखना।

M P B S E

अनुशासन क्या है :–

अनुशासन का मतलब होता है अपनी आदतों, क्रियाकलापों, कार्यों में नियमितता रखना। वह अनुशासन भी क्या कि दो दिन नियमित रहें और फिर अपने ढर्रे पर चल दिए। अनुशासन कभी भी बाह्य बंधनों से नहीं आता वह आंतरिक होता है। अनुशासन आपके विचारों में, संस्कारों में होता है। बाह्य अनुशासन तो अत्यंत खतरनाक है अनुशासन हटा नहीं कि आप फिर अपनी मौज – मस्ती की दुनिया में खो गए। इसलिए अनुशासन हो तो आंतरिक हो।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

छात्रजीवन में अनुशासन :-

हर सफलता अनुशासन माँगती है वर्तमान में प्रतिस्पर्धा इतनी बढ़ गई है कि हर नौकरी के लिए छात्रों को कठिन परिश्रम करना पड़ता है। इसलिए अनुशासन का महत्व भी बढ़ता जा रहा है। छात्र शुरु से अनुशासन का अभ्यास नहीं करते हैं और फिर बाद में अनुशासन के अभाव में असफलताएँ पाते रहते हैं। छात्र जीवन वह स्वर्णिम जीवन का अध्याय है जो आपका कल निर्धारित करता है। इसलिए छात्रजीवन में अनुशासन अपरिहार्य है।

उपसंहार :-

अतः छात्र अनुशासन के बिना, बिना ज्वाला तप्त की अग्नि के समान है। अपने आप को अनुशासित रखना असंभव नहीं है बस उसके लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। अनुशासन आपके जीवन में सफलता लाए या ना लाए लेकिन आपको एक अच्छा व्यक्ति तथा सम्मान का पात्र जरुर बना देगा।
अच्छी जीवनशैली को अनुशासन युक्त बनाना छात्र जीवन का प्रथम कर्तव्य होना चाहिए।

MPBSE